कृपया अपनी बाईबल के हर एक वचन को ध्यान से और पूरी तरह से पढ़ें।

ज्यादातर वचन अंग्रेजी की किंग्स जेम्स वर्शन की बाईबल से लिए गए हैं।

आज हम **मनुष्य के प्राण (SOUL)** के ऊपर अध्ययन करेंगे-
इस विषय की पढाई के लिए कृपया अंग्रेजी की के. जे. वी. बाइबल के वचनों को देखें।
कृपया ध्यान दें:

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

1) अंग्रेजी के सोल (SOUL) शब्द के लिए हिंदी बाइबल में विभिन्न अनुवादों का प्रयोग किया गया गया है। ज्यादातर वचनों में सोल (SOUL) शब्द का अनुवाद "प्राण" किया गया है।
2) अंग्रेजी के स्पिरिट (SPIRIT) शब्द का अनुवाद हिंदी बाइबल में ज्यादातर "आत्मा" किया गया है।

आत्मा / प्राण (SOUL) **क्या** है?

आम तौर पर विभिन्न धर्मों में और…. वैज्ञानिकों के बीच में आत्मा / प्राण (SOUL) के बारे में क्या विचार हैं?

आइये हम पहले इस मामले को देख लें -

हिन्दू ⇨ इनका मानना है कि "आत्मा" / प्राण (SOUL) **अदृश्य** और **अमर** है ..... जो मृत्यु पर शरीर को छोड़कर एक नए शरीर में प्रवेश करती है - इसे **पुनर्जन्म** कहा जाता है!! पूर्णता प्राप्त करने तक यह चक्र चलता जाता है और फिर यह माना जाता है कि अंत में "आत्मा" **(SOUL)** ... "परमात्मा" **(GOD)** में मिल जाती है।

मुस्लिम ⇨ इनका मानना है कि अल्लाह ने बहुत सी आत्माएँ बनाई हैं (उर्दू में "रूह").... और उन्हें मांस के शरीरों में डालकर पृथ्वी पर यह जांचने के लिए भेजा है कि वे अल्लाह को याद करती और आदर करती हैं या नहीं। ये आत्माएँ **अदृश्य** और **अमर** हैं जो कि नष्ट नहीं की जा सकतीं। सभी आत्माएँ जो अल्लाह का आदर या उपासना करती हैं और उनके प्रति आज्ञाकारी हैं उन्हें प्रतिफल में अनन्त जन्नत मिलेगी और
सभी दूसरी आज्ञा न माननेवाली आत्माओं को यातना की अनन्त आग यानि **"दोज़ख"** (या नरक) में डाला जायेगा जहाँ उनपर पुरे अनन्त काल के लिए अत्याचार किया जायेगा और सताया जायेगा!!

बौद्धधर्मी ⇨ इनका मानना है कि "आत्मा" **अदृश्य** और **अमर** है और जीवन का लक्ष्य "निर्वाणा" या "मोक्ष" है **(पुनर्जन्म की प्रक्रिया से छुटकारा)** । मोक्ष की प्राप्ति

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

कई बार जन्म लेने की एक श्रृंखला के बाद होती है जिसमें "आत्मा" बहुत सी देहों में प्रवेश करती है, और मनुष्य के रूप में जन्म लेने के अलावा जानवरों, पक्षियों, कीड़ों, मछली आदि के रूप में भी जन्म लेती है।
यह माना जाता है कि आत्मा को नष्ट नहीं किया जा सकता और... केवल शरीर ही मरता है!

अब हम **ईसाईयों** और इनके दो विभागों पर आते है...

रोमन केथोलिक ➪ इनका मानना यह है कि आत्मा **अदृश्य** और **अमर** है जो मृत्यु पर शरीर को छोड़ती है ताकि वह तुरंत परमेश्वर के सिंहासन के सामने अपने जीवन के लिए न्याय का सामना करे। (प्रकाशितवाक्य (Revelation) 20:12 वचन को देखें)

प्रकाशितवाक्य (Revelation) 20:12 "फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गई; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात जीवन की पुस्तक; और जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया"।

..... और प्रतिफल में स्वर्ग या नरक पाए। क्योंकि कई स्वर्ग के योग्य नहीं हैं और कई इतने **भी बुरे** नहीं हैं कि नरक में भेजा जाये, इनका मानना है कि एक तीसरा स्थान है जिसे **"परगेटरी" (Purgatory)** कहा जाता है जहाँ समय के साथ आत्माओं का शुद्धिकरण होता है taki उन्हें स्वर्ग के लिए तैयार किया जाए और इसके योग्य बनाया जाये!

निश्चित रूप से इस शिक्षा का बाइबल में कोई आधार नहीं है।

इस प्रकार आत्मा को शरीर की मृत्यु के बाद भी जीवित माना जाता है और साल में एक अलग दिन **इन** आत्माओं से और **इनके लिए** प्रार्थना करने को रखा गया है जिसे ... **"ऑल सोल्स डे"** कहा जाता है... - जो कि नवम्बर 2 को आता है।

प्रोटोस्टेंट ➪ इनका मानना यह है कि आत्मा **अदृश्य** और **अमर** है और कहा जाता है कि आत्मा मृत्यु पर **"सो जाती है"** जो न्याय के दिन जीवित उठती है और तब वे सब जिन्होंने यीशु को **अपनाया** था, **"उद्धार"** पाएंगे।
(प्रेरितों (Acts) 4:12 वचन को देखें)

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

प्रेरितों (Acts) 4:12 "किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें" ।

... और स्वर्ग को जायेंगे और बाकि सभी सब नरक और यातना की अनंत आग में जायेंगे (**कई प्रोटेस्टेंट लोग यह भी मानते हैं कि आत्माएं तुरंत -** स्वर्ग और नरक को जाती हैं और न्याय के दिन उन्हें वापस लाया जाता है ताकि न्याय प्राप्त करके वे स्वर्ग या नरक **फिर से लौट जाएँ**!!!)
इस प्रकार आजकल के मिशनरी प्रयास मुख्य रूप से **आत्मा को नरक से बचाने के लिए** किये जा रहे हैं!
एक प्रोटेस्टेंट सेवक ने यहाँ तक कहा है कि आप एक मूंगफली के छिलके में एक लाख आत्माओं को डाल सकते हैं!-
शायद वे यह कहने की कोशिश कर रहे थे कि **आत्मा अदृश्य** और ..."अशरीरी" दोनों है!

वैज्ञानिक ⇨ इनका मानना है कि **आत्मा** से सम्बंधित यह **"रहस्य"** अवश्य सही होगा। क्योंकि बहुत से प्रयोग इसे साबित करने जैसे लगते हैं।
मरने वाले व्यक्तियों को हवाबंद मोटे कांच के डब्बों में बंद कर दिया गया और उनकी मौत होने पर कैमरों में दर्ज किया गया कि

मानवीय हस्तक्षेप के बिना "रहस्यमय" तरीके से वे मोटे कांच चटक गये। इस प्रकार से यह माना जाता है कि अवश्य शरीर की मृत्यु पर "आत्मा" ने बचने का एक रास्ता बनाने के लिए कांच को चटकाया होगा!! (Proof Reading done till here)

इस प्रकार से हमने देखा, ईसाइयों सहित सभी विभिन्न धर्मों में .... और यहां तक कि वैज्ञानिक भी यह मानते हैं कि ... आत्मा / प्राण (SOUL)-

⇨ **1) अदृश्य है और देखी नहीं जा सकती।**
⇨ **2) अमर और अविनाशी है जो मर नहीं सकती!**

तब मनुष्य की आत्मा / प्राण (SOUL) के बारे में **वचन हमें क्या सिखाते हैं**?

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

क्या जो हमने अभी पढ़ा वही सिखाते हैं?

आइये हम इस विषय को यहेजकेल (Ezekiel) 18:4, 20 वचनों में देखें -

यहेजकेल (Ezekiel) 18:4, 20 "...इसलिये जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा। ...जो प्राणी पाप करे वही मरेगा..." ।

चोंकाने वाला रहस्योद्घाटन यह है कि

"... जो प्राणी (SOUL) पाप करे वही मर जायेगा।"

जी हाँ! वचन सिखाते हैं कि एक प्राण / आत्मा (SOUL) **मर सकती** है और ... <u>सभी आत्मायें जिन्होंने पाप किया है उन्हें **अवश्य मरना** ही है</u>!

क्योंकि **<u>सभी पापी हैं</u>**, तो ....अवश्य **सारी** आत्माओं को मरना ही है!

इस तथ्य के बारे में हम भजन संहिता (Psalms) 22:29 वचन में पढ़ते हैं -

भजन संहिता (Psalms) 22:29 "...वे सब जो मिट्टी में मिल जाते हैं और अपना अपना प्राण नहीं बचा सकते, वे सब उसी के सामने घुटने टेकेंगे।"

जी हाँ! पूरी मानवता में से कोई भी **प्राण / आत्मा (SOUL)** मृत्यु से नहीं बच सकती। -- **सभी आत्मायें मरती हैं**!

जी हाँ! केवल शरीर ही **<u>नहीं</u>** मरता बल्कि ... प्राण / आत्मा (SOUL) भी मरती है!

जी हाँ! बाइबल यही सिखाती है!

पुराने नियम के कुछ वचनों में प्राण / आत्मा (SOUL) की मृत्यु या विनाश की और भी पुष्टि की गयी है -

[भजन संहिता (Psalm) 33:19; 40:14; 56:13]

"कि वह उनके प्राण को <u>मृत्यु</u> से बचाए..."

"जो मेरे प्राण की खोज में हैं..."

"क्योंकि तू ने मुझको (मेरे प्राण को / my soul) <u>मृत्यु</u> से बचाया है..."

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! पुराने नियम के इन सारे वचनों में प्राण / आत्मा (SOUL) को मृत्यु और..... **विनाश** से **बचाने** या **छुड़ाने** के बारे में बात की गयी है ।
इस प्रकार से यह बहुत स्पष्ट है कि बाइबल के पुराने नियम की **शिक्षा यह है कि - सभी प्राण / आत्मायें मरती हैं!**

अब **नये नियम** में क्या लिखा है? क्या यह भी प्राण /आत्मा (SOUL) की मृत्यु के बारे में सिखाता है?

आइये हम इन वचनों में देखें -

याकूब (James) 5:20; प्रेरितों (Acts) 3:23

"तो वह यह जान ले कि जो कोई किसी भटके हुए पापी को फेर लाएगा, वह एक प्राण को मृत्यु से बचाएगा और अनेक पापों पर परदा डालेगा"

"परन्तु प्रत्येक मनुष्य (SOUL) जो उस भविष्यद्वक्ता की न सुने, लोगों में से नष्ट किया जाएगा"

[कृपया ध्यानदें कि प्रेरितों 3:23 वचन में अंग्रेजी के सोल (soul) शब्द का अनुवाद हिंदी में 'मनुष्य' किया गया है।]

जी हाँ! यहाँ स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि आत्मा **मर सकती है** और.... **नष्ट की जा सकती है!**

मृत्यु या आत्मा के विनाश की एक **सामंजस्यपूर्ण** शिक्षा **नए नियम** में भी पायी जाती है।

यीशु की आत्मा/ प्राण (SOUL) का क्या हुआ?

जब यीशु कलवरी के क्रूस पर मरे तब क्या उनकी आत्मा मरी?

आइये हम इस महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर यीशु के शब्दों में देखें -

[Matthew 26:38 "... My soul is exceeding sorrowful, even unto death."]

मत्ती (Matthew) 26:38 "... मेरा जी (आत्मा / प्राण (SOUL)) बहुत उदास है, यहां तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है..."

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

[कृपया ध्यान दें कि इस वचन में अंग्रेजी के "soul" शब्द का अनुवाद "जी" किया गया है और "प्राण निकला जा रहा है" का उपयोग "death" यानि मृत्यु के लिए किया गया है।]

यदि **यीशु की आत्मा / प्राण मर नहीं सकती** तो इस वचन में यीशु अपनी आत्मा / प्राण की मृत्यु के दुःख के बारे में बात क्यों करेंगे?

जी हाँ! यीशु ने ऐसा इसलिये कहा क्योंकि उनकी आत्मा मर **जाएगी** और … वह मर **सकती** थी।

इसीलिए भविष्यद्वाणी में उनकी मृत्यु के बारे में कहा गया था, जैसा कि हम यशायाह (Isaiah) 53:12 वचन में पढ़ते हैं –

"… He hath poured out his soul unto death …"

"… उसने अपना प्राण (SOUL) मृत्यु के लिये उण्डेल दिया …"

जी हाँ! **यीशु की आत्मा / प्राण (SOUL) भी मरी!** हालाँकि हम पढ़ते हैं कि आत्माएँ **पाप के कारण** मरती हैं, लेकिन हम देखते हैं कि यीशु के मामले में उनकी आत्मा **अपने पाप** के लिए **नहीं** मरी, **बल्कि …. दुनिया के पापों के लिए मरी**। **हाँ! एक बलिदान-संबंधी** मृत्यु!

इस प्रकार से हमने देखा कि बाइबल यह सिखाती है कि सभी आत्माएँ मरती हैं - **यीशु की आत्मा … सहित!!!**

अब हम पूछते हैं- **क्या आत्मा के लहू होता है**?

कोई कहेगा कि "**यह कैसा सवाल है**?" क्योंकि साधारणतया यह माना जाता है कि केवल शरीर में लहू होता है - **आत्मा में नहीं**!

आइये हम यिर्मयाह (Jeremiah) 2:34 वचन में देखें –

"Also in thy skirts is found the blood of the souls of the poor innocents …"

"तेरे घाघरे में निर्दोष और दरिद्र लोगों (SOUL) के लहू का चिन्ह पाया जाता है; …"

[कृपया ध्यान दें कि इस वचन में अंग्रेजी के "SOUL" शब्द का अनुवाद "लोगों" किया गया है।]

जी हाँ! बाइबल के अनुसार आत्मा के लहू **होता है**!

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

इस प्रकार से बाइबल की एक और महान सच्चाई हमारे सामने लायी गयी है!

जी हाँ! एक आत्मा **<u>अवश्य दिखनी चाहिए</u>** क्योंकि .... लहू दिखाई देता है!

और अब हम यहोशू (Joshua) 11:11 वचन में आत्मा का एक और विषय पढ़ते हैं -
"And they smote all the souls that were therein with the edge of the sword," (Only found in KJV Bible)
"और जितने प्राणी (Souls) उसमें थे उन सभों को उन्होंने तलवार से मारकर नष्ट किया;..."

जी हाँ! आत्माओं / प्राणों (Souls) को .... तलवार से काटा भी जा सकता है!!
अब आप वास्तव में चकित हो रहे होंगे और ... अब आप के लिए **<u>बड़ा सवाल</u>** यह होगा कि -

वास्तव में एक आत्मा क्या है?

क्योंकि बाइबल के अनुसार आत्मा **<u>दिखाई देती है</u>** और .... **<u>मर सकती है</u>** या **<u>नष्ट की जा सकती है</u>**!

इस प्रश्न का सबसे अच्छा उत्तर **खुद परमेश्वर** के द्वारा दिया गया है क्योंकि..... वह आत्मा के रचयिता हैं!!
परमेश्वर ने **मनुष्य की प्रथम आत्मा को कैसे रचा**, इसका वर्णन हम उत्पत्ति (Genesis) 2:7 वचन में पढ़ते हैं –
"And the LORD God formed man of the dust of the ground, and breathed into his nostrils the breath of life; and <u>man became a living soul</u>"
"तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और <u>आदम जीवित (Living) प्राणी (SOUL) बन गया</u>"।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! यहां परमेश्वर **<u>आत्मा की रचना</u>** का एक स्पष्ट विवरण देते हैं।

	बनना	
शरीर (भूमि के तत्वों से) + **श्वास** (परमेश्वर की जीवनदायक आत्मा)	---------->	**जीवित प्राणी/ आत्मा (Living SOUL)**

शरीर अकेले ... आत्मा / प्राण (SOUL) **नहीं** है!

श्वास (Breath) या परमेश्वर की जीवनदायक आत्मा (SPIRIT) अकेले ... मनुष्य की आत्मा / प्राण (SOUL) **नहीं** बन सकती!!

दोनों <u>मिलकर</u> एक जीवित प्राणी / आत्मा (Living SOUL) बनते हैं!!

हम इस बात को बेहतर समझने के लिए पानी के घटकों (components) का एक उदाहरण लेते हैं।

हम देखते हैं कि H_2 **(हाइड्रोजन)** + O **(आक्सीजन)** = H_2O **(पानी)**

जब हाइड्रोजन के दो हिस्सों को ऑक्सीजन के एक हिस्से के साथ जोड़ा या संयुक्त किया जाता है तो इसके परिणामस्वरूप पानी बनता है।

सिर्फ हाइड्रोजन पानी नहीं है, न ही केवल ऑक्सीजन पानी है!

मनुष्य की आत्मा / प्राण (SOUL) के साथ भी ऐसा ही है!

केवल शरीर ही आत्मा / प्राण (SOUL) **<u>नहीं</u>** है; उसी प्रकार केवल श्वास या "आत्मा" (SPIRIT) भी आत्मा / प्राण (SOUL) **<u>नहीं</u>** है।

शरीर और श्वास या "आत्मा" (SPIRIT) दोनों **मिलकर** जो बनता है उसी को **आत्मा / प्राण (SOUL)** कहते हैं!

जब जीवन का **श्वास (Breath)** या आत्मा (SPIRIT) शरीर को छोड़ देती है, तब शरीर फिर से जीवनरहित बन जाता है और वह वापस मिट्टी में लौट जाएगा और तब जीवित आत्मा / प्राण (SOUL)... **और नहीं होगी**!

इस प्रकार से सभोपदेशक (Ecclesiastes) 12:7 वचन में आत्मा / प्राण (SOUL) की मृत्यु का वर्णन किया गया है --

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

"Then shall the dust return to the earth as it was: and the spirit shall return unto God who gave it"
"तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा (SPIRIT) परमेश्वर के पास जिस ने उसे दिया लौट जाएगी"।

जी हाँ! यह **आत्मा / प्राण (SOUL) की मृत्यु** का वर्णन करता है!
ध्यान दें कि जीवन का श्वास, जिसे परमेश्वर ने आदम को उसकी रचना के समय दिया था, उसका उल्लेख यहाँ "आत्मा" (SPIRIT) के रूप में किया गया है।

इसका क्या होता है के बारे में हम क्या पढ़ते हैं?

यह वचन बताता है कि - "आत्मा (SPIRIT) परमेश्वर के पास जिस ने उसे दिया लौट जाएगी"

क्या परमेश्वर के पास वापस उड़कर जाने के लिए **'आत्मा' (SPIRIT)** या **'श्वास'** के पास हाथ, पैर या पँख हैं?

इसका उत्तर है -- बिलकुल **नहीं**!!

तब इस वचन का मतलब क्या है?
आइये इसे हम एक उदाहरण से समझें –

पट्टे (lease) पर लिए गए घरों के मामलों में, जब इसकी अवधि पूरी हो जाती है या पट्टा **समाप्त** हो जाता है, तो आमतौर पर यह सुनने में आता है कि

"थोड़े समय में, इस घर का पट्टा इसके मालिक के पास वापस लौट जाएगा!"

निश्चय "पट्टे" के हाथ या पैर तो होते नहीं हैं कि वो चल कर लौट जाए!
"इसका मतलब बस यह है कि स्वामित्व और इस घर में रहने का अधिकार इसके **मालिक के पास वापस लौट जाता है"।**

'आत्मा ' (SPIRIT) या श्वास के साथ भी ऐसा ही होता है!
जीवन को बनाए रखने की शक्ति उसके पास लौट जाती है जिसने इसे दिया था **यानि खुद परमेश्वर** के पास!
यह असलियत कि **"आत्मा"** (SPIRIT) का मतलब **"श्वास"** है, अय्यूब (Job) 27:3 वचन में इसकी पुष्टि होती है –

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

"क्योंकि अब तक मेरी साँस बराबर आती है, और परमेश्वर का आत्मा मेरे नथुनों में बना है"।

यह कितना स्पष्ट है!

आत्मा / प्राण (SOUL) के लिए इब्रानी (Hebrew) भाषा में **सूच (PSUCHE)**, और यूनानी (Greek) भाषा में **नेफिश (NEPHESH)** शब्द का प्रयोग किया गया है

आत्मा (SPIRIT) के लिए इब्रानी (Hebrew) भाषा में **न्यूमा (PNEUMA),** और यूनानी (Greek) भाषा में **रुवाक (RUWACH)** शब्द का प्रयोग किया गया है

इस प्रकार से **समस्त** जीवित सृष्टि, जिनके पास शरीर और श्वास है … वे **आत्मा / प्राण (SOULS)** हैं -

मछली, पक्षी, जंतु, कीड़े आदि...

और इसलिए हम सभोपदेशक (Ecclesiastes) 3:18-21 वचनों में पढ़ते हैं कि –

"मैं ने मन में कहा, "यह इसीलिए होता है कि परमेश्वर मनुष्यों को जांचे कि वे देख सकें कि वे पशु-समान हैं।" क्योंकि जैसी मनुष्यों की वैसी ही पशुओं की भी दशा होती है; दोनों की वही दशा होती है, जैसे एक मरता वैसे ही दूसरा भी मरता है। सभों की स्वांस एक सी है, और मनुष्य पशु से कुछ बढ़कर नहीं; सब कुछ व्यर्थ ही है। सब एक स्थान मे जाते हैं; सब मिट्टी से बने हैं, और सब मिट्टी में फिर मिल जाते हैं। क्या मनुष्यों का प्राण (Spirit of man) ऊपर की ओर चढ़ता है और पशुओं का प्राण (Spirit of the Beast) नीचे की ओर जाकर मिट्टी में मिल जाता है? यह कौन जानता है?"

[कृपया ध्यान दें कि इस वचन में अंग्रेजी के स्पिरिट (spirit) शब्द का अनुवाद हिंदी में 'आत्मा' की जगह 'प्राण' किया गया है]

मनुष्यों और पशुओं में जीवन का श्वास या "आत्मा" (SPIRIT) के सम्बन्ध में **कोई अन्तर नहीं** है।

उनमें विभिन्नता यह है कि मनुष्य को **<u>अधिक बुद्धि की क्षमता</u>** दी गई है।

दोनों की श्वास एक ही है! आप पूछ सकते हैं ऐसा कैसे?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

आइये एक उदाहरण लें: मान लीजिए कि हम अलग-अलग रंग और डिजाइन के 10 टीवी सेट लेते हैं। वे सारे बाहर से दिखने में अलग हैं लेकिन अंदर की ट्यूब, इलेक्ट्रोड्स, तार आदि सब एक ही हैं। लेकिन उन सब में एक और चीज **समान** है!

वे सभी बिजली से चलते हैं!

जब **बिजली** चली जाती है तो वे सब "मर" जाते हैं या काम करना बंद कर देते हैं!

अब सवाल यह है कि -

क्या कोई **बिजली को अलग** करके यह बोल सकता है कि बिजली का कौन सा **हिस्सा** टीवी के किस सेट में गया?

बिलकुल भी नहीं!

क्योंकि बिजली की **ऊर्जा** (शक्ति) जो **टीवी** सेट को **चलाता** है वो **सभी** टीवी सेट के लिए आम है!

यही सिद्धांत मनुष्य और पशुओं की आत्माओं / प्राणों (SOUL) के लिए भी काम करता है!

साँस की कोई अलग पहचान नहीं है और न ही इसका एक अलग अस्तित्व है, बल्कि यह महज एक **शक्ति** है जो कि शरीर में जीवन देता है और जीवन को बनाए रखता है।

"आत्मा" (spirit) या जीवन देने वाली **सांस** के बारे में **सच्चाई** का अध्य्यन करने के बाद आईये अब हम आत्मा के दूसरे अंश के बारे में अध्य्यन करें जो की **शरीर है!**
आईये हम भजन संहिता 139:14 वचन से पढ़ें -

भजन संहिता (Psalm) 139:14 “मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूं। तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं (my soul) इसे भली भांति जानता हूं”।
[कृपया ध्यान दें कि इस वचन में अंग्रेजी के soul शब्द का अनुवाद हिंदी में "आत्मा" / प्राण (SOUL) की जगह “मैं” किया गया है]
जी हाँ! मनुष्य के शरीर की संरचना “भयानक और अद्भुत रीति से” की गई है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

यह शरीर हड्डियों, मांसपेशियों, ऊतकों, नसों, धमनियों, तन्त्रिकाओं और अंगों की क्या एक **प्रणाली** है!!

सभी अंग सही सामंजस्य में काम करते हैं!

क्या आपने कभी सोचा है कि परमेश्वर ने आदम को कैसे बनाया होगा?

परमेश्वर ने आदम को कैसे रचा?

क्या परमेश्वर ने एक मिट्टी की गुड़िया बनाई और फिर उसमें जीवन का सांस फूंका और क्या **<u>जादुई</u>** तरीके से परिवर्तन लाया गया?

कुछ लोग ऐसा ही सोचते हैं!

लेकिन वचन तो कुछ और ही बताते है!

वचन हमें बताते हैं कि कैसे परमेश्वर ने पहले आदम और उसके शरीर को बनाया!

इसके बारे में हम अय्यूब (Job) 10:10 वचन में पढ़ते हैं -

अय्यूब (Job) 10:10 "क्या तू ने मुझे दूध के समान उंडेलकर, और दही के समान जमाकर नहीं बनाया"?

इस वचन का मतलब क्या है?

यह वचन बताता है कि कैसे परमेश्वर ने **<u>पहले</u>** हड्डियों का **साँचा** बनाया और फिर उसमें तरल कैल्शियम को उंडेला जिसने निर्धारित आकर में एक ढाँचे का **<u>गठन</u>** किया।

जी हाँ! जैसे जब एक **घर** का निर्माण किया जाता है तो सबसे पहले **<u>खंभो</u>** का निर्माण किया जाता है जिसपर पूरा घर टिका होता है, उसी प्रकार जब वे मनुष्य को बना रहे होंगे तो परमेश्वर ने सबसे **पहले** हड्डियाँ बनाई होंगी।

इसके बाद परमेश्वर ने क्या किया होगा?

इसके बारे में हम अय्यूब (Job) 10:11 वचन में पढ़ते हैं -

अय्यूब (Job) 10:11 "फिर तू ने मुझ पर चमड़ा और मांस चढ़ाया और हड्डियां और नसें गूंथकर मुझे बनाया है"।

जी हाँ! हड्डियों को बनाने के बाद उन्हें चलाने के लिए हड्डियों को **मांसपेशियों** के साथ जोड़ा गया जो कि धमनियों और नसों के साथ जुड़े हुए थे जिसमें **"जीवन"** रक्त के द्वारा था, जो कि **<u>अंदर बाहर प्रवाहित होता रहता है</u>**।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इसके बाद इन सबको मांस और त्वचा से **ढका गया**!

और यह सिर्फ मनुष्य के निर्माण की **"बाहरी"** या **बुनियादी** कहानी है!!

हम अभी तक विभिन्न अंगों की **"अंदरूनी"** कहानी में नहीं गए हैं-
फेफड़ों, पेट, लीवर, आंत,आंखें,कान, गुर्दा, दिल आदि.

यदि हम इन सब अंगों के विवरण में जाएंगे तो यह एक **जीव विज्ञानं** की कक्षा हो जाएगी!

फिर भी हम अभी मानव शरीर के कुछ सांख्यिकीय तथ्यों का अध्ययन करते हैं -

शरीर में **206 हड्डियाँ** हैं। सबसे बड़ा हड्डी **फीमर (जांघ की हड्डी)** है और सबसे छोटी हड्डी कान के पर्दा की हड्डी **(कोक्सीक्स)** है।

पूरे शरीर को **20 वर्ग फुट की त्वचा** ढकती है!

शरीर में लगभग **5 मिलियन (50 लाख) बाल** हैं और प्रत्येक बाल 3 वर्ष की अवधि तक रहता है।

शरीर में **650 मांसपेशियाँ** हैं।

शरीर के भीतर **100** से अधिक **जोड़** हैं।

शरीर में **60000 मील तक लंबी नसें**, धमनियां और रक्त कोशिकाएँ हैं।

शरीर में **30000 मिलियन तंत्रिका कोशिकाएँ** (3000 करोड़) हैं।

हमारी जीभ में **9000 स्वाद कलिकाएं** हैं जो विभिन्न किस्म के स्वादों को पहचानने का कारण बनती हैं, और इसके अनुसंधान के लिए विज्ञान की एक अलग शाखा है - **पाक विज्ञान और व्यंजन!**

शरीर में स्पर्श और गर्मी और सर्दी के विभिन्न बदलाव को **महसूस** करने के लिए **4 मिलियन (40 लाख) रिसेप्टर्स** त्वचा में हैं।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

फिर हम शरीर के नियंत्रण के मुख्यालय पर आते हैं - **मस्तिष्क**!
मस्तिष्क में चलनेवाले संकेत एक **महान** टेलीफोन एक्सचेंज की तरह हैं - एक सबसे जटिल **ग्रे** और **सफेद** पदार्थ से बने कंप्यूटर की तरह।
एक सेकंड में मस्तिष्क के द्वारा प्राप्त की गई संदेशों की संख्या और उन संदेशों पर किये गए काम पर विचार करना भी विस्मयकारी है! **जरा सोच के देखें!**

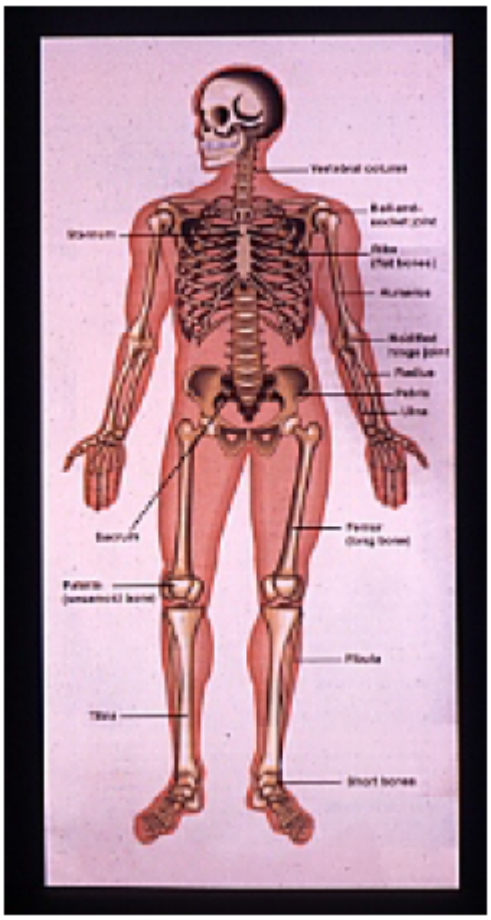

इस प्रकार से सचमुच में "मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूं" वचन की गहराई को हम समझ सकते हैं।
और इस प्रकार से हम इस वचन को मान सकते हैं जो कहता है कि - "तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं (my soul) इसे भली भांति जानता हूं"।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इस प्रकार से आत्मा (SOUL) के बारे में **सच्चाई** देखने और सिखने के बाद हम ये जानना चाहेंगे कि आखिर एक **अमर आत्मा** का विचार आया कहाँ से?

आइये हम इसका उत्तर उत्पत्ति (Genesis) 3:4 वचन में देखें -

उत्पत्ति (Genesis) 3:4 "तब सर्प ने स्त्री से कहा, "तुम निश्चय न मरोगे" ।

जी हाँ! **उत्पत्ति 2:16, 17** वचनों में परमेश्वर के द्वारा कहे गए सत्य के विरुद्ध यह **<u>प्रथम झूठ,</u>** "झूठ के पिता" (शैतान) के द्वारा आया था -

उत्पत्ति (Genesis) 2:16, 17 "और यहोवा परमेश्वर ने आदम (SOUL) को यह आज्ञा दी, "तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू (SOUL) कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू (SOUL) उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा"

जी हाँ! आदम एक **<u>प्राण या आत्मा (SOUL)</u>** था!

और परमेश्वर उसे उसकी एक प्राण या आत्मा (SOUL) के रूप में मृत्यु के खतरों से सूचित कर रहे थे।

जब परमेश्वर ने कहा - "...तू (SOUL) अवश्य मर जाएगा... "

यहाँ "तू" **<u>आदम</u>** यानि **<u>प्राण या आत्मा</u>** (SOUL) के संदर्भ में कहा गया था!

और परमेश्वर ने आदम यानि प्राण या आत्मा (SOUL) से साधारण भाषा में यह कहा था कि अगर उसने बात नहीं मानी तो वह यानि प्राण या आत्मा (SOUL) **मर जाएगा**।

यह परमेश्वर की गवाही थी, अदन की वाटिका में!!!

आज 99.9 % लोग शैतान की बात को मानते हैं और परमेश्वर की उस गवाही को **नहीं मानते** हैं।

ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि हम यशायाह (Isaiah) 5:20 वचन में पढ़ते हैं -

यशायाह (Isaiah) 5:20 "हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते, जो अंधियारे को उजियाला और उजियाले को अंधियारा ठहराते, और कड़वे को मीठा और मीठे को कड़वा करके मानते हैं!"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! शैतान ने "उजियाले" (**सत्य**) को अँधियारा और "अँधियारे" (**गलत / झूठे उपदेशों**) को उजियाला बना दिया है क्योंकि हम पढ़ते हैं कि वह "झूठ का पिता" है (यूहन्ना (John) 8:44) ।

इस प्रकार से संसार अभी पूरी तरह से "अँधियारे" या **असत्य** से भरा है जैसा कि हम **यशायाह (Isaiah) 60:2** वचन में पढ़ते हैं "...पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है... "

लेकिन हमें यह आश्चर्य है कि ऐसा **क्यों** है कि दुनिया के लोग **आसानी से शैतान के इस झूठ को स्वीकार करते हैं**?

ऐसा इसलिए है क्योंकि हम सभोपदेशक (Ecclesiastes) 3:11 वचन में पढ़ते हैं -

सभोपदेशक (Ecclesiastes) 3:11 "उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुन्दर होते है; फिर उसने मनुष्यों के मन में अनादि-अनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न किया है... "

जी हाँ! परमेश्वर ने खुद ही मनुष्यों के हृदयों में **"अनादि-अनन्त काल"** (भविष्य के लिए एक अनंत आशा) डाला है, लेकिन शैतान ने उस आशा को पृथ्वी पर नहीं जैसा कि **परमेश्वर की योजना** में भविष्य में मरे हुओं का पुनरुत्थान है और पृथ्वी पर राज्य की स्थापना होनी है **(मत्ती (Matthew) 6:10)**, बल्कि स्वर्ग या नरक में **मोड़** और **बिगाड़** दिया है।

क्योंकि हम सभोपदेशक (Ecclesiastes) 3:11 वचन में आगे पढ़ते हैं -

सभोपदेशक (Ecclesiastes) 3:11 "...तौभी जो काम परमेश्वर ने किया है, वह आदि से अंत तक मनुष्य समझ नहीं सकता"।

जी हाँ! वर्तमान में समस्त मानवजाति परमेश्वर के वचन से **परमेश्वर की दिव्य योजना** को समझने में असमर्थ होने के कारण शैतान **आसानी से सत्य** को **तोड़ना-मरोड़ना** कर पा रहा है और -

" ...अंधियारे को उजियाला और उजियाले को अंधियारा..." कर रहा है ।

तो मृत्यु में प्राण या आत्मा (SOUL) की **वास्तविक स्थिति क्या है**?

इसका उत्तर हम सभोपदेशक (Ecclesiastes) 9:4 वचन में पढ़ते हैं -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

सभोपदेशक (Ecclesiastes) 9:4 "परन्तु जो सब जीवितों में है, उसे आशा है, क्योंकि जीवत कुत्ता मरे हुए सिंह से बढ़कर है"

इसका मतलब क्या है?

यह ये दिखाता है कि मृत्यु के बाद **जीवन ठहर जाता** है।

इसलिए एक कुत्ता जिसकी तुलना भी **कभी** जीवित सिंह की शक्ति और महिमा से नहीं की जा सकती, उसको सिंह से **बढ़कर** बताया गया है। जब सिंह मर जाता है, क्योंकि जीवन में शक्ति और महिमा है लेकिन **मृत्यु में कुछ भी नहीं**, क्योंकि मृत्यु **पूरी तरह से जीवन रहित है**!!

इसे स्पष्ट रूप से सभोपदेशक (Ecclesiastes) 9:5, 6 वचनों में व्यक्त किया गया है...

सभोपदेशक (Ecclesiastes) 9:5, 6 "क्योंकि जीवते तो इतना जानते हैं कि वे मरेंगे, परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते, और न उनको कुछ और बदला मिल सकता है, क्योंकि उनका स्मरण मिट गया है। उनका प्रेम और उनका बैर और उनकी डाह नष्ट हो चुकी, और अब जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है उसमें सदा के लिये उनका और कोई भाग न होगा॥"

जी हाँ! मरे हुए कुछ भी नहीं **जानते** और कुछ भी नहीं **कर** सकते!

"मृत्यु के बाद जीवन" और "मृत्यु के बाद" **बदला** लेने की **धारणाओं** का **बाईबल में कोई आधार नहीं** है और वे केवल **पौराणिक धारणाएं** हैं।

मरी हुई आत्माओं के लौट आने और जीवित लोगों से बदला लेने जुड़ी सभी **पिक्चर** और **कहानियाँ बाईबल सम्बन्धी सत्य नहीं** है।

यह सभोपदेशक (Ecclesiastes) 9:10 वचन में पढ़ने से बहुत स्पष्ट है...

सभोपदेशक (Ecclesiastes) 9:10 "जो काम तुझे मिले उसे अपनी शक्ति भर करना, क्योंकि अधोलोक में जहां तू जाने वाला है, न काम, न युक्ति, न ज्ञान और न बुद्धि है"॥

जी हाँ! अधोलोक में **न** काम, **न** युक्ति, **न** ज्ञान और **न** बुद्धि है!

जी हाँ! मरी हुई आत्मा का **कोई अस्तित्व है ही नहीं**।

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

इसके बाद हम दूसरे मामले के बारे में इन वचनों में पढ़ते हैं--

भजन संहिता (Psalm) 6:5 "क्योंकि मृत्यु के बाद तेरा स्मरण नहीं होता; अधोलोक में कौन तेरा धन्यवाद करेगा"?

भजन संहिता (Psalm) 115:17 "मृतक जितने चुपचाप पड़े हैं, वे तो याह की स्तुति नहीं कर सकते,"

जी हाँ! मृतक परमेश्वर की स्तुति **नहीं करते** और **न ही** कर सकते हैं क्योंकि वे "चुपचाप पड़े हैं"!!
हमारे रोमन कैथोलिक मित्र **इससे अनजान है**, इसलिए वे **मरे हुओं की**, जैसे कि मरियम और अन्य संतों की जो कि सभी मृत लोगों के समान "चुपचाप पड़े हैं", **उनकी पूजा करके** धोखे में हैं।

और अब हम एक और मामले के बारे में अय्यूब (Job) 7:9, 10 वचनों में पढ़ते हैं...
अय्यूब (Job) 7:9, 10 "जैसे बादल छटकर लोप हो जाता है, वैसे ही अधोलोक में उतरने वाला फिर वहां से नहीं लौट सकता; वह अपने घर को फिर लौट न आएगा, और न अपने स्थान में फिर मिलेगा"।

जी हाँ! मृतक फिर से अपने घर नहीं लौट सकते!

हिन्दु और मुस्लिम इस बात से अनजान है और वे बहुत बड़े अन्धविश्वास और धारणा के कारण इस भय में रहते हैं कि "मृतक" उन्हें परेशान करने के लिए लौट कर आयेंगें!!
इसलिए जब मुर्दे शरीर को जलाने या गाढ़ने के लिए ले जाया जाता है तो घर से लेकर पूरे शमशान या कब्रिस्तान तक के पूरे रास्ते में **उबले हुए चावल** डालने की आदत है।
यह माना जाता है कि मृतक की **"आत्मा"** उस रात को लौटने की कोशिश करेगी और बहुत ज्यादा उबले हुए चावलों को मार्ग में बिखेरने से, **"आत्मा"** अपने वापस लौटते समय **इन चावल के सारे दानों को उठाएगी**, जिसमें बहुत समय लगेगा–
और दूसरे दिन की सुबह हो जाएगी -- तब वह "आत्मा" कार्य नहीं कर पाएगी क्योंकि यह माना जाता है कि आत्माएँ **केवल** रात में ही कार्य कर सकती है!
लेकिन किसी ने भी यह सवाल नहीं पूछा और न ही सोचा कि -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

अगली रात के बारे में क्या??? और उसके बाद की रातों के बारे में क्या??

अन्ततः हम अय्यूब (Job) 14:21 वचन में पढ़ते हैं -- .....

अय्यूब (Job) 14:21 "उसके पुत्रों की बड़ाई होती है, और यह उसे नहीं सूझता; और उनकी घटी होती है, परन्तु वह उनका हाल नहीं जानता।"

इस वचन का मतलब क्या है या किस सन्दर्भ में लिखा गया है?

बहुत से लोग यह सोचकर धोखे में रहते हैं कि उनके **मरे** हुए माता -पिता और मित्र **<u>उन्हें देख सकते हैं</u>**। इसका सबूत हम बहुत से पुरस्कार समारोह में देख पाते हैं जब पुरस्कार जीतने वाला **<u>आकाश की और देखकर</u>** अपने **हाल में मरे हुए परिवार के सदस्य** को यह मानते हुए याद करता है कि मृतक उसे **उस** क्षण में देख सकते हैं!!

वो क्षण कितना **भावुक** होता है!!

कितनों ने इस दृश्य को **सही मानकर** आँसू भी बहाये हैं!!

लेकिन बाईबल हमें सिखाती है कि ऐसा नहीं है!!

शैतान

"भूत" के माध्यम से

और **<u>मृतक से बात करने के अभ्यास</u>** के माध्यम से मानवजाति को धोखा देता आ रहा है!

लेकिन **सत्य** सबको स्वतंत्र करता है, जैसा कि प्रभु हमें यहून्ना (John) 8:32 वचन में सिखाते हैं।

यहून्ना (John) 8:32 "तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा"

जी हाँ! आज हमने वचन से **आत्मा** की **सच्चाई** के बारे में सुना है और वाक्य में इसने हमें "स्वतंत्र" किया है।

आज हमने बाईबल में आत्मा के उपदेश से सम्बन्धित <u>सिद्धान्तों</u> के बारे में अध्ययन किया है।

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: <u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

लेकिन बाईबल में वचनों के कुछ अंश ऐसे हैं जो कि यह सुझाव देते हुए प्रतीत होते हैं कि "आत्मा" **मृत्यु के बाद भी जीते रहती है**।

राजा शाऊल का मरे हुए शमूएल की **"आत्मा"** से बात करने के लिए भूत - सिद्धि करनेवाली के पास जाना **(1 शमूएल (Samuel) 28: 7-19)** ।

यीशु का पहाड़ पर रूपान्तर और मूसा और ऐल्लियाह की मरी हुई **"आत्माओं"** से बात करते हुए देखा जाना **(मत्ती (Matthew) 17:1-3)** ।

क्रूस पर चोर और यह मानना कि उसकी **"आत्मा"** तुरन्त स्वर्ग चली गयी थी।

धनी मनुष्य और निर्धन लाजर की कहानी और उनके मृत्यु के बाद के **जीवित** अनुभव **(लूका (Luke) 16:19-31)** ।

जी हाँ! ये इस विषय पर कुछ बाईबल सम्बन्धी **"परस्पर विरोधी"** वचन हैं।
इनके बारे में हम अगली कक्षा में हमारे **आत्मा** के **अध्ययन** के **भाग-2** में **पढ़ेंगे**।
--आमीन-

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com